International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 19-01-2025, Accepted: 20-02-2025, Published: 08-03-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 45-46

भारतीय राजनीति के सन्दर्भ में महिलाओं की स्थिति

Bhura Lal Vaishnav
Assistant Professor Department of Political Science, Shree Sanwariya ji Government College, Mandphiya, India

सारांश
भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है। जिसकी अपनी सभ्यता व संस्कृति है, जिस पर हमें गर्व है। भारतीय लोकतन्त्र में महिलाओं की अहम भूमिका है। लोकतान्त्रिक प्रणाली में महिलाओं को स्वतन्त्रता प्राप्ति के साथ ही भारत में महिलाओं को समान राजनीतिक अधिकार प्रदान किये गये है। लेकिन स्वतन्त्रता प्राप्ति के 70 वर्ष उपरान्त भी महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात भारत में महिलाओं की दशा सुधारने के लिये अनेक प्रयास किये गये और कई योजनाएं बनाई गई, परन्तु कल्याणकारी योजनाओं का वांछित प्रभाव भारतीय महिलाओं पर समान रूप से नहीं पड़ा'। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं की सामान्य परिस्थितियों में कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं हुआ। उक्त आलेख में राजनीतिक सन्दर्भ में महिलाओं की स्थिति का अनुमान लगाया गया है।

मुल शब्दः लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली, सभ्यता, प्रतिनिधित्व, कल्याणकारी योजना, सत्ता, सक्रियता, प्रभुता, समकक्ष।

भारत में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का अर्थ है कि निर्वाचन एवं प्रत्याशी के रूप में सहभागिता से लेकर सत्ता में महिलाओं की भागीदारी से है। मताधिकार की प्रक्रिया से निर्णय –निर्माण में अहम भूमिका निभाती है। यह राजनीतिक सहभागिता है। सत्ता में भागीदार होने का अर्थ है कि शक्ति प्राप्त करना और वैध शक्ति (सत्ता) ही वह प्रमुख प्रक्रिया है जो समाज की अन्य व्यवस्थाओं और संरचनाओं को निर्देशित संचालित एवं प्रभावित करती है। इसलिए राजनीति में महिलाओं की स्थिति एक महत्वपूर्ण मांग बन गई है।''

भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका

सामान्यतः महिलाओं के बिना सृष्टि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। पुरुष प्रधान समाज कभी स्वीकार नहीं कर पाया कि महिलाओं को उनका हक मिले। जिसने उसके जीवन में अतुलनीय योगदान दिया। वैदिक काल में शिक्षा सिर्फ उच्च वर्ग की बालिकाओं व राजकुमारियों को ही दी जाती थी जो अपवाद स्वरूप है। बौद्धकाल में भी महिलाओं की दशा में विशेष सुधार नही हुआ। ब्रिटिश काल में शिक्षा को अवश्य बढ़ावा मिला लेकिन महिला शिक्षा में नगण्य रही।
लेकिन वर्तमान में प्रजातन्त्रिय शासन में महिला एवं पुरुष दोनों को उन्नति तथा उत्थान के समान अवसर प्रदान किये। जो समय की मांग भी है भारतीय संस्कृति में तो महिला की शक्ति को इंगित करते हुए ईश्वर को भी अर्धनारीश्वर के रूप में स्वीकार किया गया जो समानता का अच्छा उदाहरण है यथा

द्विधो कश्वत्वात्मनों देहधर्मेन पुरुषोभवेत।
अर्द्ध न नारी तस्था स विराजमसृजत् प्रभु।।

भारत में महिलाओं की स्थिति

ऐतिहासिक एवं स्वतन्त्र भारत की महिलाएं आज समाज और राष्ट्र निर्माण की मुख्य धारा में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलते हुए एक नवीन भारत की परिकल्पना को साकार करने में सलग्न है। आज जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं उत्कृष्ट भूमिका नहीं निभा रही हो। एक ओर जहां शहरी (महिलाएं स्कूलों, कॉलेजों, दफ्तरों, कारखानों आदि में पुरुषों के साथ देश के विकास में सलग्न है। वही दूसरी ओर ग्रामीण महिलाएं खेत खलिहानों तथा अन्य घरेलू उद्योगों में दिन–रात काम करके देश के आर्थिक विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रही है। इन सबके बावजूद समाज में नारी की स्थिति दोयम दर्जे की समझी जाती है। खासकर ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं और अधिक अपेक्षित है।
किसी भी देश के विकास में महिलाओं की स्थिति ज्ञात करने हेतु यह जानना आवश्यक है कि वहां के समाज में महिलाओं की क्या स्थिति रही है? इस गहन तथ्य का ज्ञान उस देश के इतिहास में छिपा होता है। अतः हमे सर्वप्रथम यह समझने (जानने) का प्रयास करना होगा कि हमारे देश ऐतिहासिक पृष्ठों पर महिलाओं का कैसा चित्र है।

वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति

वैदिक समाज भारतीय इतिहास का सर्वाधिक आदर्श समाज रहा है। वस्तुतः वेद भारतीय संस्कृति के प्राण है। इस युग में महिलाओं ने अपने समस्त अधिकारों का पूर्णता के साथ उपयोग किया था वैदिक युग में महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष अधिकार प्राप्त था। अथर्ववेद में कहा गया है कि ''नववधू तू जिस घर में जा रही है वहाँ की तु साम्राज्ञी है तेरे ससुर, सास, देवर और व्यक्ति तुझे साम्राज्ञी समझते हुए तेरे शासन में आनन्दित रहे।'' नारी को शिक्षा, धर्म और राजनीति एवं सम्पति में पुरुष के समान अधिकार थे ऐसा लगता है कि वैदिक काल में महिला कुछ हद तक समाज के आर्थिक विकास में योगदान देती थी।
कुल मिलाकर इस काल में महिलाओं की स्थिति अन्य सभी कालों की अपेक्षा सम्मानजनक थी।

उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति

उत्तर वैदिक काल को सामान्यतः परिवर्तन काल भी कहा जा सकता है इस काल में सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में स्त्री पुरुष के समान अधिकार रखती थी। भीष्म पितामह का यह कथन है कि'' स्त्री को सदैव पूज्य मानकर स्नेह का व्यवहार करना चाहिए।' अतरू उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति सम्मानजनक रही थी।

मध्ययुग में महिलाओं की स्थिती

इस काल का आरंभ ही मातृसता की समाप्ति और नारी की पराधीनता के आधारभूत विधान से होता है। जिसमें नारी को वर्ण व्यवस्था के निम्न तक वर्ण शुद्र के साथ ही पाप योनि वाले वर्ण में रखा गया है। इस काल में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति का ह्रास हुआ उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है ।

इस काल के आते–आते नारी बाल्यकाल में पिता, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में पुत्रों के संरक्षण में रहने की आदि बन चुकी थी। उसे अपने अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। वह परिवार की एक आवश्यकता मात्र बनकर रह गयी थी। हालाकि बौद्धधर्म के उदय के बाद महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ भी, परन्तु मुगल काल में नारी की दशा और भी दण्डनीय हो गयी। पर्दा प्रथा ने नारी को घर की चार दीवारी में कैद रहने के लिए मजबूर कर दिया। समाज में बाल विवाह का प्रचलन बढ़ गया शिक्षा के द्वार लगभग बन्द कर दिये गये। सत्ती प्रथा अपने शिखर पर पहुंच गयी। वस्तुतः मध्यकाल में स्त्रियों की स्वतन्त्रता सब प्रकार से छीन ली गई तथा उन्हें जन्म से मृत्यु तक पुरुषों के अधीन कर दिया गया था।

आधुनिक काल में महिलाओं की स्थिति

सन् 1940 तक महिलाओं की एकान्तता तथा उनके निम्न स्तर के लिए हिन्दु धर्म, जाति, व्यवस्था संयुक्त परिवार, इस्लामी शासन, तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद उत्तरदायी है। इस काल में महिलाओं की विभिन्न क्षेत्रों में निर्योग्यताएं बनी रही। भारतीयों द्वारा समय–समय पर समाज सुधार के विशेष प्रयास किये गये, किन्तु अंग्रेजो का समाज सुधार में सहयोग नहीं मिला महिलाओं को शोषित तथा पीडित रखना ही उनके हित में था। इस समग्र पृष्ठभूमि में भारत की महिलाओं के सशक्तिकरण की आवश्यकता समझी गई ।

लोकतन्त्र सही अर्थों में तभी सफल है जब राजनीतिक दलों, सांसदों और सरकारों के स्तर पर राष्ट्रीय निर्णय पुरुष व महिलाओं द्वारा समान रूप से लिए जाये। आजादी के बाद सत्ता परिवर्तन के साथ ही राजनीति मैं उनकी कुल और प्रभावी मौजूदगी कम हो गयी। अगर हम गांधी युग में सरोजनी नाड्यू, सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफ अली, डॉ. सुशीला नायर आदि की तुलना आज की मायावती, शीला दीक्षित, राबड़ी देवी जयललिता, ममता बनर्जी, आदि से करे तो महिला राजनीतिज्ञों के प्रभाव तथा उनके महत्व में लगातार गिरावट को साफ समझा जा सकता है।

निष्कर्ष

अतः स्पष्ट है कि महिलाओं को राजनीतिक जीवन का पूर्णतः ज्ञान और अनुभव तब ही होगा जब उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया जायेगा। क्योंकि जब भी उन्हें अवसर दिया है तब उन्होंनें अवसर मिलने पर अपनी दक्षता का परिचय दिया है और समाज में अपनी भूमिका का दृढ़ता पूर्वक निर्वाह किया है। लेकिन भारतीय समाज ने ही महिलाओं के हितों को अनदेखा किया है जिसके कारण महिलाएं आज भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है लेकिन महिलाओं का उनके यथोचित स्थान दिया जाए। शासन (सरकार) के सभी अगों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ाया जाए तो निश्चित ही राजनीतिक रूप से महिलाओं की स्थिति अच्छी हो सकती है जिसके लिए वे वास्तविक हकदार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, अजयशंकर – भारत में महिला सशक्तिकरणः ऐतिहासिक विवेचन, गायत्री पब्लिकेशन्स – 2010
2. पाटिल, प्रतिभा देवी सिंह – सशक्त स्त्री सशक्त देश, योजना अक्टूबर 2008
3. शर्मा, प्रज्ञा – महिला विकास एवं सशक्तिकरण, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर – 2001
4. गुप्ता नीलम – ''भारत में महिलाओं के राजनीतिक अधिकार एवं नेतृत्व के आयाम, पृष्ठ सं.–15
5. चतुर्वेदी, इनाक्षी एवं अग्रवाल सीमा – ''महिला नेतृत्व एवं राजनीतिक सहभागिता आविष्कार पब्लिशर्स जयपुर 2013 पृष्ठ सं.–15
6. सिंह राजवाला, सिंह बधुवाला – भारत में महिलाए, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर, 2006 पृ०स० 11
7. सिंह आनन्द प्रकाश– भारत में महिला सशक्तिकरणः नीति एवं नियोजन, 2009 – पृ० स०– 09
8. बोहरा आशारानी – भारतीय नारी दशा और दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 1983 पृ० स० 11
9. बारबरा नेलसन एण्ड नजमा चौधरी वूमैन एण्ड पॉलिटिक्स, पृ० स०–14
10. अंसारी एम० ए० – ''राष्ट्रीय महिला आयोग और भारतीय नारी'' ज्योति प्रकाशन, जयपुर 2002 पृ० स० – 157,
11. खेर डां. अजना – भारतीय राजनीति में महिला की सहभागिता – नवम्बर 2022
12. चौधरी डॉ. लाखा राम – भारतीय राजनीति और महिला सशक्तिकरण– Feb–2017.